जल संरक्षण

क्या करें

और

क्या नहीं करें

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की-247667

आवासीय जल संरक्षण

घर के अन्दर.....
करें :

* शावर कम समय तक करें ।
* शावर बन्द करके साबुन लगाएं ।
* ब्रुश करते समय नल बन्द कर दें ।
* दाढ़ी बनाते समय चलते जल का प्रयोग न कर सिंक को भर लें ।
* सब्जी पकाने में कम से कम पानी का इस्तेमाल करें ।
* कपड़ों में साबुन लगाते समय टोंटी बन्द कर दें ।
* कपड़ों को खंगालते समय टोंटी बन्द कर दें ।
* घर से बाहर जाते समय पानी का मुख्य वाल्व बन्द कर दें ।
* पानी के मीटरों को देखने की आदत डालें ।

नहीं करें

* नहाने के लिए ज्यादा पानी का इस्तेमाल नहीं करें ।
* फ्रीजर से समय से पहले आइस ट्रे छुड़ाने के लिए बहते पानी का प्रयोग नहीं करें ।
* कपड़े धोने में अधिक डिटर्जेंट का प्रयोग नही करें ।
* कपड़ों को हाथ से धोते समय बहते पानी का प्रयोग नहीं करें ।

घर के बाहर.....
करें :

* बिलकुल सवेरे लान पटा लें ।
* बागवानी में बर्तन/कपड़े धोने से बचे पानी का इस्तेमाल करें ।
* उपयोगी जानकारी प्राप्त कर पटवन समय को ध्यान में रखें ।
* पटवन के समय से थोड़ा पहले पानी बन्द कर दें और होज में जमा पूरे पानी का इस्तेमाल करें ।

* होज में होने वाले छेदों की जांच करें।

नहीं करें :

* नाले में पानी नहीं वहने दें
* होज से फर्श साफ न करें। झाड़ू से साफ करें ।
* गर्मी और तेज हवा के दिनों में पानी का इस्तेमाल नहीं करें ।
* वाहन मार्गों पर पटवन के पाइप नहीं छोड़ें ।
* बार-बार लान नहीं पटाएं ।

सार्वजनिक स्थान.....
करें

* जल आपूर्ति तंत्र में लीक होने पर स्थानीय निकायों को सूचना दें ।
* सार्वजनिक नलों को धीमे खोलें और इस्तेमाल के बाद बन्द कर दें ।
* जितनी जरूरत हो उतने ही पानी का इस्तेमाल करें ।
* दूसरों के द्वारा खोले गए नलों को बन्द कर दें ।
* सार्वजनिक जल की हानि को व्यक्तिगत हानि समझें ।
* सार्वजनिक स्थानों पर पानी को बचाने से सम्बन्धित हिदायतें लगा दें ।

नहीं करें

* बच्चों को पानी से नहीं खेलने दें ।
* सार्वजनिक नलों पर अधिक दबाव न दें ।
* सार्वजनिक नलों से तोड़ फोड़ का खेल न खेलें ।
* सार्वजनिक सुविधा के स्थानों पर बहुत ज्यादा पानी का इस्तेमाल न करें ।
* सार्वजनिक शौचालयों में पानी बहता हुआ नहीं छोड़ें ।

खेत.....

करें

* फसलों में पानी की आवश्यकंता का हिसाब रखना सीखें।
* जितनी जरूरत हो उतना ही पानी लगाए।
* फसल की बढ़ोतरी के दर से पानी के प्रयोग को घटाएं बढ़ाएं।
* फसलों, मिट्टी और जलवायु से अच्छी तरह मेल खाने वाली सिंचाई प्रणाली का चुनाव करें।
* सिंचाई समय को बतलाने वाले सेंसरों का प्रयोग करें।
* जलाशयों के कोने में जमा पानी का फिर से इस्तेमाल करें।
* लीक से बचने के लिए जोड़ों और कप्लिगों की जांच करें।
* सिंचाई प्रणाली का अच्छी तरह से रख रखाव करें।
* पक्की नहरों से सिंचाई करें और नहरों को चूहों आदि से बचाएं।
* नहर के प्रवाहों के रिकार्ड रखें।
* ड्रिप एवं स्प्रिकलर से शुद्ध जल का प्रयोग करें।

नहीं करें

* फसल को बहुत अधिक नहीं पटाएं।
* यूँ ही पटवन न करें, उचित समय क्रम से करें।
* घास पतवार पानी को सोख लेते हैं। उन्हें बढ़ने नहीं दें।
* पाइप के जोड़ों/कप्लिगों में लीक न होने दें।
* सिंचाई समय को तय करने में अनुमान से काम न लें।
* नहरों को नही तोड़ें।
* जल को केवल अमूल्य संसाधन समझने के बजाए यह सोचें कि जल न हो तो क्या और कैसे होता ?